#### 1952 Ancient origins of the Namokar Mantr (2 parts)

Jain Gazette 1952

हि० ११ दिसम्बर, १९४२]

### जेन गतर

अनादि-मलमंत्र

[से॰-पं॰ होराआल जैन सिद्धान्तशामी] 

महान एवं पवित्र आत्माओं को नसस्कार करने की परम्परा आजकल से नहीं, अनादि काल से चली आरही है। जैनधम में आरहन्त. सिड, खाबाब, उपाध्याय खौर साधु ये पांच महान् आत्मा माने गये हैं। ये किसी व्यक्ति-विशेष के नाम नहीं, प्रस्युत आस्मिक गुणों के विकास से प्राप्त होने वाले महान् आध्यात्मिक मंगल पर हैं। जयसे संसार है, तभी से उससे मुक्ति याने का मार्ग भी अविभिन्नज्ञ - रूप मे चला आरहा है। यतः संसार व्यनादि है, व्यतः उससे मुक्ति पाने का प्रयास करने वाने और मुलि-लाभ करने वाले महापुरुष भी अनादि काल से हो होते चले आ रहे हैं। शास्त्रीय भाषामें इन्हें पर मेछी कहते हैं। संसारी आत्मा . अनादि काल से आठ प्रकार के द्रव्य - कर्म बन्धनों से बढ़ है, और उनके निमित्त से उत्पन्न होने वाले अज्ञान, राग, द्वेप, मोह आदि मावकमों से प्रोरित होकर प्रतिच्छा नवीन-नवीन कमों का संचय करता हुआ पण्झिमण करता का रहा है। जब इसे किसी सगुर के उपदेश द्वारा स्व-बोध प्राप्त होता है, तब बह संसार-परिश्रमण का कारण राग-द्वेप को ज्ञानकर उसे होड़ने और आत्म-न्वरूप के वाने के लिए अप्रसर होता है और पर-वस्तुओं में इष्ट-अनिष्ट की कल्पना को दूर कर, बाह्य प्रवृत्तियों को रोककर रातदिन मन यचन काय-की एकाप्रता के साथ आरम-साधना करता है, इस साधना करने वाले व्यक्तियों को ही शास्त्रों की परिभाषा में 'साधु परमेप्टी' कहा

राया है।

जब यह साधु अपनी साधना के द्वारा साचु के लिए आवश्वक कत्तेव्यों में निष्णात हो जाता है + रात-दिन के शाम्त्राभ्यास के डारा विशिष्ट जानी बन जाता है और संसार-दुन्त-निमम्न मानवों को उपदेश देकर और आत्म सावना में प्रयुत्त नवीन साधुओं को गास्त्र - अञ्चापन कराने का अधिकारी वन जाता है, तब उसे ज्याध्याय, अध्यापक या पाठक सामों से पुकारने लगते है। शास्त्रीय, भाषा में इन्हें उपाच्याय परमेष्ठी कहते हैं।

डब वही साधु विद्या, यय और आवरण में साचुओं के सध्य सबंधे छ गिना जाने लगता है, स्रोर स्वयं उसका गुरु अपना उत्तरा-विकार उसे सींपता है, या गुरु के अमाय में सायमंघ उसे अपना गित्ता और दीवा देने का अधिकारी घोषित कर देता है, तब बे आचार्य-परमध्दी बहलाने लगने हैं।

जब ये ही महायुरूप अपनी आश्म-साधना ध्य-तपस्या और गंभीर-अध्ययन के द्वारा उचरोचर आस्मश्रुद्रि करते हुए झानावरण, दर्शनावरमा, मोहनीय और अन्तराय नामक बार धार्तिया-कर्मी का नाश कर अनग्त झान,

को प्राप्त कर वीतराग, सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हो जाते हैं, स्रोर जीवन्मुफ अवस्था प्राप्त कर जेते हैं तब अपनी दिल्य-बाएगी के द्वारा संसार के उदार के लिए प्रवृश होने हैं, तब उन्हें बरहन्त परमेच्ठी कहने हैं, उन्हें ही सारा साधु संघ अपने मोजमागे का नेता मानता है और इस नेतृत्व गुएा के कारण ही वे पांची परमेष्ठियों में सर्वप्रयम नमस्कार के योग्य माने गये हैं।

जब उन अरहन्त परमात्मा का जीवन आल्प रहता है, तय बाहरी उपदेश, विहार आदि सब कियाओं को रोककर अपनी साधना के डारा रोप बचे हुए येदनीय, आयु, नाम और गोत्र कमें को भी नष्ट कर चायिक सम्यक्त्वादि अष्ठ गुणां से युक्त होकर मुक्त हो जाते हैं अर्थात शिव पर प्राप्त कर लेते हैं, तव उन्हें सिद्धपरमेष्ठी कहते हैं।

इस अकार एक सावारण आत्मा से पर-मात्मा बनने के लिए ये पांच पद माने गये हैं। उक्त ४ पदां पर अवस्थित महान आत्म. आं को परमेष्ठी कहते हैं। ये पंच परमेष्ठी आनाहि काल से होते आ रहे हैं। जिस मंत्र में उन पांचों परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है, उसे जैन लोग अनादि मुलमंत्र,नसस्कारमंत्र या मंत्राधिराज कहतेहैं, क्योंकि यह रष्टियादपूर्व में वर्छन किये गये सब मन्त्रों का राजा है, और उन मन्त्रों का मूल भी है। वह अनादि मूल-मंत्र इस प्रकार है:--

यमो अस्टिंतायां यमोसिद्धायां यमो आइरीयायां रामो उबच्छायाएं गामो लोए सध्वसाहरां॥

सन्नार्थ-आरहतों को नमस्कार हो, सिदों को नमस्कार हो, आवायों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और लोकवर्शी सर्व साध्यों को नमस्कार हो ॥१॥

विशोपार्थ-इस नमस्कार मंत्रा के प्रथम पद में अरिहंताणं और अरहताणं, ये दोनों पाठ मिलते हैं । प्रथम पाठ के अनुसार 'अरिहत' इस प्राकृत पर के संस्कृत में दो सप अनुसार 'अरहंत' इस प्राकृत पद का संस्कृत रूप 'अरहा' होता है। इस प्रकार अरिहा, अरहा और अर्हत इन तीनों शब्दों के अर्थ पर यहां कमशः विचार करते हैं:--

अरि नाम रायु का है। ययापि जीव के गुणों को सभी कमें घातने हैं, किन्तु उन सब में प्रधान मोहकुर्वि है, उसके नष्ट हो जाने पर रोप रुमों का विनाश अवश्यम्मावी है। अत-एव जो मोहरूप कर्म-शत्रु का इनन करे इसे अरिहा या अरिहंत कहते हैं। अववा अरि नाम मोह का है। रज नाम ज्ञानावरण और दर्शनावरण कमें का है। जैसे रज अवांत पूछि आंखों में वली जाय, तो कोई बाझ वस्तु नहीं दिखाई देती, उसी प्रकार ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्मरूप रज से पूरित या व्याप्त आत्मा भी स्व भीर पर को देखने भीर जानने में असमये रहता है, अतएव उक्त दोतों करती। मुनीम जो आसाम को ओर यथे है।

का है। इस प्रकार 'आरि, रत और रहस्य' इन तीनों पदां के आदि अज़रों को लेकर 'अ र र' हुआ। समानता के कारण एक किंतर का लोग हो जाने से 'अर' अवशिष्ट रहता है। अयवा 'र' से रत और रहस्य इन दोनों का ही अर्थ महरा करना चाहिये । इस प्रकार 'अर' अवात भार धाति कमों के हनन करने वाले 'अरहन्त' फडलाने हैं।

המתור ואת עומיות המשור המינה המינה המינה המינה המינה המינה במינה ביו היו או היו היו היו היו היו היו היו היו הי

'आई' धातु प्तायंक है, उससे आहंतीति आहेन' इस प्रकार अहेत शब्द की सिदि होती है। सकल-परमात्मा तीर्थहर आईददेव ने गर्म जन्म, दीचा ओर ज्ञानकत्यागुह के समय इन्द्रादिक के दारा महान पूजा-सरकार प्राप्त किया दे और आगे निवासकरयास-सम्बन्धी उरसव प्राप्त करेंगे, इस प्रकार साविशव पूता के योग्य होने से जिनेन्द्रदेव की 'अहंत' ऐसी सार्थक संज्ञा है।

कही कही 'अरिहंत, अरहंत' के समान 'अरहन्त' पाठ भी मिलता है । संस्कृत में 'रह' धात अंग्ररोत्पत्ति के अर्थ में आती है सा जिनका अब आगे को मबरूपी अंकुर नहीं उगने वाला है, उन्हें 'अहरन्त' करते हैं। अरहन्त के चार धातिया कमें तो नष्ट हो ही च के हैं और रोव चार अधातिया इम नियम से उसी भव में नष्ट होंगे । इस प्रकार जय कमेंहवी वीज ही नष्ट होगवा, तब संसार रूपी अंकर कैसे उम सकता है ? नहीं उम सकता । इस प्रकार 'अरहंग' नाम भी कार्यक जानना चाहिए।

व्यथवा, 'व्यर्थत' इस प्राकृत पर का 'व्यरधान्त' ऐसा भी संस्कृत रूप होता है जिस के अनुसार यह अर्थ निकलता है कि जिनके सकल परिषद का उपलझगाभूत रय, और जरा, मरणादिहत अन्त अयात् विनारा विद्यमान नहीं है, अर्थात जो परिप्रहादि से रहित होने के कारण योतराग और जन्म, जरा, मरणादि से रहित हो चुके हैं, उन्हें अखंत कहते हैं।

अथवा 'अरहंत' पर का 'अरहोऽन्तरः भी एक संस्कृत रूप बनता है, जिसका यह वर्ष होता है कि 'अ' अर्थात् अविग्रमान हे 'रहः अर्थात एकान्त रूप प्रदेश या स्थान और अन्त अर्थात् गिरि गुहा आदि का मध्य माग जिनके उन्हें अरहत कहते हैं। केवल आन प्राप्त होजाने पर अरहतके त्रिज्ञोक के विद्यत-वर्ती पदार्थी में जानने के लिए कुछ भी रोग नही रहता है। इस प्रकार अरिहत नाव से बीतरागता, अरहोऽन्तर नाम से सबेहता, भौर आईन माम से हितापदेशकता सुचित की गई है। इन तीनी गुणी से युक्त अरहत पर मात्मा ही सत्यार्थ आप्त है। ------

पावागढ सिद्धचेत्र-की सहावता शात्र करने के लिये मुनीम भी आद्धाल जो वाषण असमा कर रहे हैं बनके द्वारा दि० कैन समाज कसकता से करीब १४६०) तथा बसाल विः क्षेत्र समात्र से ४०)वान्त हुए। वस्वतार

# fas qu faurat, ?Eur ]

# वानादि-मुलमंत्र Be las - of do electronist fazin enter

[ गतांक से आगे]

कहने का सारदेश यह है कि जिल्होंने मोह-रूपी ब्रुस को जला दिया है, जो विश्लीयाँ आज्ञान रूपी समुद्र से वचीने होगाये हैं, जिन्ही-में अपने रुप्रस्त विच्नी के पर्ग को नष्ट कर दिया है, जो सबे बाधाओंश विनिर्गत है,अवल है. जिल्होंने सदन के प्रताय का दाखत कर दिया है, जिन्होंने तीनी काली को विषय करने-रूप तीन नेवीं से सर्व प्रतायों के सार को प्रत्यचा कर लिया है, जिन्होंने राग, देव, मोह रूप त्रिप्रसार को सबंधा भरम कर दिया है, जो मनियों के अधियांत है, जो रतनवयस्य त्रिधल को धारण करके मोहरूर अन्यकासुर क कवरुधवुश्द का हरण करने वाले हैं, जिल्होंने आत्म - त्वरूप को मित्र कर लिया है और जिन्होंने सिध्यामन रूप दुनेयों का आश्त कर दिया है। जिन्होंने अनग्त झान, दर्शन, सुमाबीयें जायिक सम्यकत्व, दान, लाभ, भाग, अपमाग आदि धनच्त गुलों के प्रगट हो जाने से यही मनुष्य लोक में ही सिद्धस्य हुए प्राप्त कर लिया है, जो स्फटिकमणि-महीधर के गर्म से उदित होते हुए आदित्य विम्ब के समान देवीप्यमाग हैं, जो स्व-शरीर-प्रमाण होने हुए भी झान भी आयेखा राखें को जानने से विष्टवच्यायी है, जो स्य-स्थित आशेष प्रमेवी के प्रत्यका करने की अपेचा विश्वरूप है, जो अरोप आमय अयात सब रोगों के दूर ही जाने से निरामय है, जो सर्व पापरूप खेलन-पुंज के खभाव हो जाने से निरंजन हैं, और जो दोयों की सबंकला या अंशों से रहित होने के कारण निष्वल हैं, ऐसे अस्टितों को नगस्कार हो।

गमा सिद्धार्ग-जो ज्ञानावरणावि सवे कमी के नष्ट कर देने से कुतकुरव है, पीदगलिक शरीर के अभाव से झान-शरीर हैं, अनन्त ज्ञान और अनन्त दर्शन के प्राप्त करने से लोक और अलोक के जानने और देखने बाखे है, जिस मनुष्य-शरीर से मोच प्राप्त करते हें उमी आकार को धारण करने से जा पुरुष.-मार है, तथा लोकके शिखर पर जो सिद्ध शिला हे उस पर अवस्थित होकर संसार रूप नाहक को देखते हुए निजानन्द रूप रस में लयलीन है, सबे दुःग्री से रहित है, मुख रूप सागर में नियम्न है, निरंजन हैं, नित्य हैं, व्यवहार हव्दि से सम्यक्त आदि आठ गुलों से युक्त है, और जिल्लय हो? से खनरन गुगों से युक्त है, खनवच एवं निर्दाय हैं, खपने सब प्रदेश रूप थापयवां से समाज परन्-तात के शासा खीर हच्टा है, जो व लशिजाके स्तंभ पर निमित त या उन्हीयों की गई प्रतिमा के खमान अमेश अम्बंका आकार से पुक्त हैं, जो सब अवयवी की अपना मनुष्याकार होने पर भी मुखीसे पुरुष के समान नहीं हैं, अधांत राखातीत था अनम्त गुणी के धारक हैं, खीर तो सब इन्द्रियों।

10 100 ne of cil के शिवल विषयों के एक देश या अति अत्रेश से जानते हैं, ऐसे सिखी की नसरकार ही । 'गामो आहरीयाण' जो दर्शन ज्ञान,

जेन मजट

NARA LINA - MURARA LINA BARA WANGSURARAR TANA MURARARA WAS WOOL HOL HOL BOOL

जारित,तर और बीचे इन पांच अकारके आजा-री का स्वयं आवरण करते हैं और तुमरे सायु-भी से आवरण कराते हैं, जो जीवद पुषेक्ष वियाग्यामी के पार्टमन है, आवारांग आदि ग्यारह आंगी के धारक है, अवचा केवल आचा-रांग के भारक होते हुए भी वाल्कालिक स्वयमय चोर पर-समयके पारमामी हैं, मेहके समान निश्चल हे, प्रिवी के समान सहिब्लु या सहन शील हैं, जिल्होंने अपने अल्हारंग मल एवं विकार को समुद्रके समान बाहर फेंक दिया रे, जो इह लोकमय, परलोक मय आदि सातों प्रकार के मयों से विवमुक्त हैं, प्रवचन रूप समद हे खताच इल के मध्यमें स्तान करने से अर्थात परमानम के परिवर्ण अभ्यास और अनमव से तिनकी बुधि निमेल हो गई है, जो शुद्ध पहा-वश्यकों का पालन करते हैं, जो सुमेन के सहश निष्करव है, शर बोर है, सिंहके समान निर्मय हैं, साधुओं में क्षेष्ठ हैं, देश कुल और जातिसे शुद्ध हैं, सीम्य मूचि हैं, अन्तरंग और बहिरंग संग के भंग में उन्मुक हैं, गगन के समान निर्खेय हैं, जो संघ के संघह और निषड में अर्थात् शिद्या और दीचा देने में कुशल हैं, जो सत्र अर्थात परमागमके अर्थ करने में निषुण हैं जिनका यश और प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है, जो मारण (आचरण) बारण (निषेध) और सावन (जल-रहाम) की कियाओं, में लिह्य उद्यमी हैं ऐसे आवायी की नमस्कार हो।

### 'गुमा उवज्कायागुं'तो चीवह विद्या-

रथानों के व्यास्थाना हैं, अथवा तात्कालिक प्रवचन के व्याख्याता होते हैं, संप्रह और निमह को छोड़कर आचाये के अरोप गुखों से समन्वित होते हैं, जो चीदह पूर्वरूपी समुद्र में अवगाहन करके स्वयं मोजमार्ग पर आरुद हैं खीर अन्य मोचा के इच्छक मुनि जनों को ररनव्रयरूप घम का उपदेश देते हैं, जो साधुओं के आधीश हैं, यतिवरों में ओष्ठ हैं, स्व-समय और पर-समय के ज्ञाता, याग्नी, और शासन के महान प्रभावक नेता होते हैं, मिध्यामतों का संहत कर सन्मार्ग के प्रचार करने में सदा निरत रहते हैं, जिनके प्रसाद से घोर संसार रूप अयंकर आटवी में असण करते और विषय-कपायरूप व्याझ के द्वारा विदारे जाते हुए मुले पथियों को सुपथ का दरान होता है, ऐसे साधुओं में झेन्द्र उपाध्यायों को नमस्कार हो।

'णमो लोए सब्बसाहगां' जो अनन्त ज्ञानादिरूप शुद्ध आत्मस्वरूप की निरन्तर साधना करते हैं, यांच महाझतों के धारक और तीन गुध्तिवी से गुप्र (सुरज़ित) हैं, अठारह हजार शील के मेवों का, और चौरासी आख असर गुणों का पालन करते हैं, जो सिंह के समान पराकमी, राज के समान स्वाभिमाती, प्रधन-वेल के समान भद्र-परिणामी, ग्रम के समान सरल, पशु के समान निरीड, पवन के समान निःसंग सर्वत्र-विद्यारी, सूर्य के समग्त

ने तथ्वी, सामर के समान गंवीर, मन्दरावल के तमान खडाल और खकरा, ज द्र क गयान शान्तियायक, मांग के समान जनायू न म युक्त, प्रच्या के समाज सहनगील, राव के समान अभिष्यत-विवास, आकृश के समान जिलेर या जिराजर्मी, शारत-मॉलन के ममान श्व-हत्य, कमल पत्र के समान चित्रपत्नेन, कञ्चय के समान गुप्तेत्व्रय, वची क समान यधेच्छ विदारी खोर उन्मुक, गेंदा के समाल एक - जात, सारगढ पत्नी के समाज अवस्त. जारय कांचन के समान जातरूव, रानवय हव मोजमागे के माचक और सदा परम पद का अन्वेषण करने बाले, ऐसे मनुष्य लोकव भी सबं साधुआं को नगस्कार हो।

11

इस मंत्रके विषयमें महर्षियोंने कहा है कि-एसो पंच गुमोक्कारो सहयपायप्यणसमा। मंगलाणं च सब्बेसि पडमं हयह मंगलं ॥

अर्थात-यह पंचनमस्कार मंत्र सब पायां

का सर्वथा नाश करने थाला है और सब मंगलों में प्रथम अर्थात केन्द्र मंगल है। इसका कारगा यह है कि महान, पवित्र और बीतराग आत्माओं के प्रति नमस्कार करने से आत्मा में श्रदा की अभिव्यक्ति होती है, श्रदा जागृत होने से मनका अन्धकार दूर होता है, संशय का नाश होता और आत्म - शक्ति का विकास होता है। आत्मशक्ति का विकास होने से सब दुःखी का नाश खतः सिद्ध है।

इस मंत्र की सबसे यड़ी विशेषना यह है कि इसमें किसी स्वकि विशेष को नमस्कार नंही किया गया है। यहां तकां कि जिस जैन धर्म में तीर्थद्वरी को सबसे महान पद मान्त है, जो घम के महान प्रवारक माने जाते हैं, अन तक का नाम इस मंत्र में नहीं लिया गया है हालांकि आरिहंतके स्वमं उनका समावेश है ही अनादि काल से अगणित तीर्थद्वर हो चुके हैं. खीर खागे अनगत होंगे तब किस किस तीबेकर का नाम मंत्र में जोड़ा जाता । इस किए सदा से इस प्रकार के व्यक्तिगत नामी को इस मुलमंत्र में स्थान नहीं मिल सका। यहां तक कि समस्टिस्य से 'खमी तिरवयराणं ' व स्वम भी 'तीर्थद्वर' इस सामान्य पर का भी महण इस मंत्र में नहीं किया गया है और यही बात उसके अनादित्व का समर्थन करती है। इस प्रकार के अनादि मुलमंत्र के लिए नजस्कार दे।

# जन कालेज में भटनागर जी

६ दिसम्बर को महाथीर हि॰ जैन डालेत में सर साण्तिस्वरूप मठनागर पथारे। आपका कालेज को और से स्वागत किया गया। सर शास्तिस्वरूप जी ने अपने संख्यि आपण में अपने देश की खाद्य स्थिति पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि विकान इस समस्या को दल करने में बहुत बड़ा सहायक हो सकता है। में इस कालेज के विद्यार्थियोंने आशा करू गार्नक वे विकास को प्यूकर बसका अपगेम देश की वस्रति में वरीं। इसके बाद जैन मेले के अवसर पर साहर से आपे हुये तैन विद्वान पंज्युत्रालास की सागर, पंठ इस्रायण्य तो बनारस, पंठ लालपत्राष्ट्रर की इन्दीर के सापण हुए।

## 1954 Ancient Origins of the Panch Namokar Mantra

पं-य तम्- ( मंनकी अला देता जाही अरिहतार्ग जाही, दियार्ग जाही आयाद्यार्ग । यही उन्द्रानका माने तेर व-यहाहूका "

में म नार्भमाने हैं। प्रत्ये राष्ट्रियों के प्रत्य के कार्य के किस्ता के किस्ता के किस्ता के किस्ता के किस्ता ना मानी नार्भमाने आत्रानी केल का है। प्रत्येनी राख्ये तो एक्रीकार्भ्याल क्यान मामनी मंतर्भने भी- लिस्ता की रियामिल अत्येक प्राता गया है।

महां भर अझा किया जा समता है कि उस प्रेमसे हेला जेतला एस्म अत्माने दित है कि जितने रहाना रागा आपे का महात्म्य बरा गया है और उसे अत्माने दित है कि जितने रहाना रागा आपे का महात्म्य बरा गया है और उसे अत्माने प्रकार्यन माता गया है ! रहना उत्मर यह है कि महान की पायेन आत्माओं को नामन्द्रार रहिने ही पायर अज्ञ-कालने नहीं, आपे वु अल्मरे कालने नार्थन अत्माओं को नामन्द्रार रहिने पायर अज्ञ-कालने नहीं, आपे वु अल्मरे कालने नार्थने आरही है। जैन्द्राय में अरिति तिदन आत्मार, उत्तरधामर् रॉर साम्म को पाय महान या पर पर माने मते हैं। ये पांचों दिन्दी नार्थने ताफ नहीं, प्रसुत आज्ञेल गुन्में भिष्मले प्राप्त में अरिति तिदन शास्त्र कि विशेषके ताफ नहीं, प्रसुत आज्ञेल गुन्में भिष्मले प्राप्त में का निर्म दिन्मी नार्थन हैं। जा करे ति साम रहान या पर पर माने को हैं। ये पांचों दिन्मी नार्थन है विशेषके ताफ नहीं, प्रसुत आज्ञेल गुन्में भिष्मले प्राप्त को कार्य प्राप्त अविनिद्धन्व राष्ट्री माल आरहा है। जास है तंत्रर है, जात उत्तले त्रीके जनेका प्राप्त अन्नेनिद्धन्व राष्ट्री माल आरहा है। या के संवार अतार है, अत्म उत्तले ही होने ना ले आरहे हैं। प्राह्मी मान्ना आहामें रहे परिष्ठी सहते हैं। आत्मक गुन्में अग्निद किलाहकी ओपका में परिकी पांच इनारके होने हैं। प्रान्न मंन्नते रतीं पाये जिसका कात्महकी ओपका में परिकी पांच इनारके होने हैं। प्राह्मत मंन्नते रतीं पाये विश्वास्ति कात्महकार पत्तरीकार विकासित होकार अन्त्रमें (कार्य प्रे कही बत जाती हे और दुसरे की जात्मर उत्तरीकार विकासित होकार अन्त्रमें (कार्य प्राह्मरारा जी) गुका सितवान वाते हे अपनी आत्मर पत्रारोकार विकासित होकार अन्त्रमें (कार्य प्राह्म वार्य वार्य की प्रार्य की प्रात्मर कार्य का प्रार्य का जात्म का जाता है।

एकि स्माट मेनमें जिन पंच प्रमिष्ठमों को तमटकार किया गया है, उन के इ. म- विकादित एको से प्यानमें रयकर यहां भिलो म क्रमते उन के अध्रेम कियार किया जात है। वं करी जीव अनगदेका नते आप्ठ मकार के में झार्लि के के रेने बंधा हुआ है ध्रमें उनके निभित्तते उसक होने वाले अझान, राग, हेम में र बंधा हुआ है ध्रमें उनके निभित्तते उसक होने वाले अझान, राग, हेम में र उभादे भाव को ते जेति हो कर प्राते क्रण नवीन नवीन को कि वंचाय करा हुआ वी अप्रण करता आरहा है। जह होने कित्ती मुगुरु के उपदेश-दाशा करा हुआ वी अप्रण करता आरहा है। जह होने कित्ती मुगुरु के उपदेश-दाशा का का प्राह्म होता है, तब वह लेता - वारे कित्ती मुगुरु के उपदेश-दाशा का का पत्न होता है, तब वह लेता - वारे का को कित्ती मुगुरु के उपदेश-दाशा का का पत्न होता है, तब वह लेता - वारे प्राह्म का ताएग रगन होय की जन कर उत्ते र होड़ने और आत्म-लर्स्ट के वाने के लिए अग्रसा होता है दिनी पर बत्तु ओ में इस आन्द्र की बल्यन को देशकी का को के लिए अग्रसा होता है दिनी पर बत्तु ओ में इस आन्द्र की बल्यन को देशका हो लाग्र का का प्रात्न का राग्त रात्न दिन मन वचन का प्रकी एका होने का की की सार आत्म- लायना का हो हि माधान बत्ता को रात्र प्राय्त की व्यानकों की ही जीन हा की की ती माम में (ताध्र पात्न को काने हिन प्रान्त की व्यानकों की ही जीन हा की का का

जम यह खाय सायना के छए सायुदे आवष्टमक इत्ते को में हा? तिहाल हो जाता है, तिरन्तर शा लगा-माहके द्वारा की झे हा ना वन अता है और हैतार- दु:एन तिमज्ञ मानवों को अपदेश देशर आता- हायना में प्रवत्त नवीन सायुओं की अप्यापन अग्रेका आधिकारी बन जाता है, तव उसे उपापक्षम, अपयापक मा पाठक नामों हो पुकारे जाते हैं। शास्त्रीम आका में

मिं 'उक्त यहा मा यहिंदी' कहते हैं। जस वही कायु विद्या, वय औ (नगरिममें जायुओं माय क्षत्रिक की ता जाते काता है औं ( व्यम जहन का लोह अप ता उनराध्य का लोपता है, मा गुरु के उना को कायुलंच उत्ते अपन गरिएका और दीक्षा रोतेन आरि कादी सो किर का रेता है, तक ने 'आन्धा येव के की , बहला ने लगते हैं। जब के ही महापुरुष अपनी अगत्म हापना, उग्र त्यास्या और गम्भीट अच्यायनके हारा उत्तरोत्तर कार्त्सिश्चार्द्ध को हे हुए ज्ञातावाण, इप्रत्यिक को अन्तर्भ तामक का चालिम को का नारा कर अगत ज्ञान, अन्तत दर्शन, अन्ततसुरा औ अन्त वीयको फ़ामकर वीतराग, हवर्द्ध और हार्य देशी हो जारे हैं और जीवन्ध्रक अवह्या छरज़ वीयको फ़ामकर वीतराग, हवर्द्ध और हार्य देशी हो जारे हैं और जीवन्ध्रक अवह्या छरज़ ता के हैं, त्रष्ठाअपनी दिव्य वाणीके द्वारा देलारके उद्यारके तिथर प्रथत होते हैं तब उन्हें आदेहत्त परिवर्ध कारी के दारा देलारके उद्यारके तिथर प्रथत होते हैं तब उन्हें आदेहत्त परिवर्ध कार्य हैं। इन्हें ही समाहत साधुराव अपने ने समन्ती दा ने ता कात्रता है और इत ने त्राच्य गुठीके कारण ही वे पानों जरने किसमें तर्य प्रथम नमस्कारके योग्र माने गये हैं।

2

जब इन अरिहन प्राता का का जीवन अल्प शेष रहत है तब वे उपदेश, विहार आदि तथ काहिरी किमाओं के रोक कर अपनी साधनाके द्वार रोष बने हर बेरभी म, आम, नाम अर्थ गोन्नकर्यको भी नष्ट के जिसे हो जाते हैं। उस तमम अतों मभी आत्मीम अनना जुण पुकट हो जाते हैं। अंग् वे लोक के शिखरण, पहुंचा का रिरावण्द आह का लोते हैं। तब उन्हें सिन्द पर मेड्डी कहते हैं। पहुंचा का रिरावण्द आह का लोते हैं। तब उन्हें सिन्द पर मेड्डी कहते हैं।

उ इत प्रकाट एक ताथाएग आत्मा हो जामात्मा बननेके लिए ये पांच पाम पद माने गमे हैं। उक्त पांचों परम पदों पर अबस्थित महान आत्मा को के प मेछी बहते हैं। ये पांचों पर्मिछी अन्मादेकाल ते होते आ रहे हैं, अतए व इनको किया- गमा नमल्का भी आत्मादे मूल मंत्र कहलाता हैं। अब यहां पर हा मंजके क्रिया- गमा नमल्का भी आत्मादे मूल मंत्र कहलाता हैं। अब यहां पर हा मंजके क्रिया- गमा नमल्का भी आत्मादे मूल मंत्र कहलाता हैं। अब यहां पर हा मंजके

'णमो आरेहनाण' अरिहलाको नमहकार हो। इस प्रथम परके शालों-में (उनरिहंगण' अर्ग 'अर्हलाण' में रोनों पाठ फिलने हें। प्रथम पाइ के अनुष्ठार 'आरिह'त' इस प्रत्मृत परके संस्कृतमें दो रूप होते हें-आरेहा अनुष्ठार 'आरिह'त' इस प्रत्मृत परके संस्कृतमें दो रूप होते हें-आरेहा औ अहित्। दिनीम पाठवे अनुषार 'अरहंत ' इह प्राकृत परका तंत्कृत हम 'आरहत ! दिनीम पाठवे अनुषार 'अरहंत ' इह प्राकृत परका तंत्कृत हम 'आरहत ! हिनीम पाठवे अनुषार 'अरहंत ' इह प्राकृत परका तंत्क्त हम 'आरहत ! हो हा प्रकार आरिहा, अरहा औ अहत इन नी तो में झब्हों के 'अर्म पर महां क्रमश: विन्जर कहे हैं।

अर्थ पर यहां अमरा: विन्तार कल हा उगरे नाम शानुका है। यथापि, जीवके एकों से लगी कर्म चारते हैं तथापि उन हकरें प्रधान मोहनीय क्र हैं। उत्तके बच्ट होजाने पर प्रोघ स्त्रीका उन हकरें प्रधान मोहनीय क्र हैं। उत्तके बच्ट होजाने पर प्रोघ

उन हमने प्रभन मोहनीम क्र हे। उत्तम बेट होगा होना हमन को उते विनाधा अवश्वमभावी हैं। अत्यव जो मोहरूप कमशालका हमन को उते अरिहा मा ओरेहंत कहते हैं। अखबा अरिनाम ग्नेहमा है। उज नाम ज्ञाना-वएण और दर्शनावाण का का है। जैसे उन अशाल चालि आंसोंमें ननी वएण और दर्शनावाण का का है। जिसे इन अशाल चालि आंसोंमें ननी जाम, तो कोई बास वल नहीं दिखाई देही, उसी प्रकार तानावाण और दर्शनावाण का दिस राजदे प्रदिन मा व्याप्त आत्मा जी स्व औए एको दर्शनावाण का कि प्रति मा व्याप्त आत्मा जी स्व औए एको देखने और जानने से अलम्बी रहता हैं ;अतएव उक्त दोनों की की दल हंडा हैं। रहस्य नाम अन्तरायकमीका है। इस प्रकार 'आरि, ज जा रहस 'इन तीनों परों के आदे अक्षरीको जेकर ' अर्ह' हुआ ! आ रहस 'इन तीनों परों के आदे अक्षरीको जेकर ' अर्ह' हुआ ! लतानना के आण एक रकार का देनों की काई उल्लाहा का है। अपका र' के रज और रहस्य उन रोने की अधीत्राण कान आहे?। उत्त प्रकार र' के रज और रहस्य उन रोने की अधीत्राण काने आहे?। उत्त प्रकार र' के रज और रहस्य उन रोने की अधीत्र ज्या की आहता की 'आर हन

c 318 1 WA E, WERE ' STEATA SEA 1 SE SANCE 'MAT , ग्राखनी सितने होती हैं 1 सकल जामाला तीर्थकार अहिंद्वाने जारी, जल्म सिक्षा שאון הוא היהו ביאות האיז זיאול אילי איש אדוה אות ההוע אוא לאיו माग्म हाने दी जिनेन्द्र रेवली 'अहित ' ऐती लंहा हाधीन है।

3

मही गही ' उगरहत औ उगहर ' के मान ' अत्रत्त ' माठ भी जिलता है। संस्तत में भए का आह अंगूरोटा सेके अर्थ में आती हैं की जिनमा अब आजे के भवात्वी अंकर नहीं अगनेकाला है, उन्हें 'अफहन ' महते हें'। आहतके नार्यातिमा कर्म ते नक् ही ही मुके हैं को होव ना अप्तार्थमा हम नियम उली भयमें नक्ट होगे। זה שיור היו להציביל אלי לו איב לו חידו , היא להוציביל שיקי לא שיו צדיהה ל י הלי שד דיהה ו זה שיהו ישוה ליהה אר היבה יחהה שואנ

अभवा (आहंत ) रह प्राक्त परका (अट्थाना ) ऐसा भी संस्कृत रूप होता है। अनि अनुसार यह अर्थ निकलता है कि जिनके सकल परिग्रम 39 लक्षण भूत रम, औ जरा-माणादिरूप अन अभीत् विलाघा विद्यमान नहीं हैं , अत्रीत् जो परि-राहार्थि रहित हाने के काण वीद्याग और जन्म, जर मएगादिले शहत हा चुने हैं , अन्ते 'अरमात ' मा 'अर्हत 'म्हते हे'।

अग्रवा 'अहित ' पर्मा ' आहो उनर: "भी एक हे हित कर बनता है किल्का मह अर्थ होता है कि ' अ ' अर्थात् अविद्यमान हे ' रह. ' अष्टीत् रकात्तरे प् प्रदेश मा हमान और अन्तर अफ्रीन जिरि- गुहादिका संध्य भाग जिनके , अहें 'अरहेधनर' महते हैं । केवलइतन आह हाजाने पर आहलके जिलोकके जिलाल वती पराधीमें

जाननेने-लिए जिन्द्रभी दोब नहीं हिता है। रत प्रकार आरिहन नामले बीतरागता, अरहो अनर नामले तर्दला

अरि अर्हन् नामले हिलोप देशकता स्तित की गह है। इन तीन उगोले उक्त आहना भामा ही सत्मार्थ आह हैं। ऐसे आरिहनों से ही अनाद इस मंत्रके

मन्नम परमें नमटकर किंग गमाहे।

· जमी मिद्यान , जो राज बाजगद एर कीरी नव्द करनेते इतकटय हैं, में अलिक शरीटके अभावते ज्ञान-शरीरी हैं, अनल कान अंग अनन रशनि के आप स्मेरे लोक-अलोक के जाने- देलनेवाले हैं, कित मनुष्य-राश्रिके मे क आम किया है, उसी आकाको का ला को मे जिस मुझ्मा हरें तथा लोकके बिग्रन मा हियत हिन्दा दिना मा बिराजकात हो का हैला भूमी बाटकको देखते हर जिजा तन्दर् परि एसमें अवसीन हैं, हर्व दुर्गि रहिन हैं, खिए रण सागा में लिमग्र हैं, निरंजन हैं, जिटन हैं, ट्यवहार राष्ट्रिये लम्प्रवत्व आर्थ आह रामोचे मुक ह आ मिभ्यम राहिके अनन गणे है क है, शुर हैं बुद हैं, आजवदा एवं निर्दाय हैं, अपने सर्व प्रदेश रूप अवमेंबांसे लमसन वन्तु जान के הההו של בוצו לי אותוסי להדה תישאה בווצאה לי און שואו און שוחה काल तक इसी सहज खाद क्षा को चलाएग किये होंगे। इन्हें ही अन्य मता-वलाम्बियोंने निगुरेग परमेश्ना, पटम श्रेट , लन्द्रियानन्तु, अभन, अगर, अन्नट अगर्द अने कें नामोर्स एकारा है। के राहि दो मीरवट कोर्म वन हरम. क्रालके भीता च्यान माहे रहते हैं। ऐसे सिंह द मिछी को अमारियूल मंत्र के रत यूसरे बदमें नमल्का किया गया है ]

' जामी अग्रादिमार ' जो दर्शन, जात, नारिन, तप अर बीर्य, इन जंच अन्त के आक्रोरोक स्वयं आवाल कहि हैं आ रूदर सामुआं से आवाल करते हैं, जो चांदह प्रवेह्न विकाटमानें मारामी हैं, कान्यारागादि कारह अंगें कारक है अभ्या के ब ल आन्मारेग के मारक होते हुए भे- तात्मारिन स ला लाम और पाट-लम मके जाला हैं, मेलके लामन निश्चाल हैं, दाख्यी के लाग तहन शीर हैं, जिन्होंने अबने अन्तेता मस एवं विकारको तमुझके तकान बाहिर केंक दिया है, भो श्रुकेक-भाग, प्रतिक्रभाग आदि लोगे प्रकादने अमेंदे रहित हैं, प्रक्रम्बरस तमुम के अगाय जलके मध्य लाग कते हे अश्वत ज्यामक वरिष्ठ अन्याह अधिनुभय हे जिनकी कुद्धे निर्मन होगा है , जो खुद्ध रीति के आवश्यकों मा जालन करेंग हैं; (मिक सर बीट हैं, सिंहते लागत किर्मि हैं, लाय ओन्से लेक हैं, देश, मुल आ आरी रे मुद्द है, सिंहम सूर्सि है, अन्तरंग और बहिरंग मरेग्र के उन्हान है, गगतके तमात जिलेक हैं, तो संधाने हंग्रह के निग्रहमें कुशल हैं, वामगात के अर्भ क्रेने में नि पुण ही, जिनना मधा औ त्रभाय तर्वल न्मह हे, जो हाएग (आवएा) भएग (निवेभ) आ लामन ( मार-एक्ण) ही क्रियोजने मित्म अग्रमी हैं, देवा आन्यामेरिको अलगद्म मलमे हत तीहरे पदमें तमहार दिया गया है।

8

' गन्नो उन्द्रानामाण' जो नायह इर्वरूप विद्याह्या केने न्माहमाता है'; अभवा तारकात्विक प्रयापम के आख्याता हैं, तंगुरु औ (तिगुर के खेड़का आवाती जर्न एकों में मंमुन्द हैं, नीयह इमेरिप लमुझमें अवगाहन का ले लाम का का मार्ग मार्ग्य ( अभवद हे और मो मरे इन्छ्य अन्य मुनिजनों को एलनयरूप आर्म अपदेश देहे हैं, जो हायुओं के अधीश हे, माहिनों में प्रेष्ठ हें, स-तमय आय-तमवकेताल हे, नाग्मी औ शाहन के महान् जभावन हें , मिश्रमा मनें का एंडनका वन्नागी के क्रमार रहेनेने सदा निरत हैं, जिनने प्रलाहते सोर एंगरहवी भयानक अटनी मे योरियमण केहे आ विषय- अवायकप् काम्रोंके हार वियारे जाते हर मूले

पश्चिक्तों की खुपाछकों प्रस्तरा प्राप्त हरता हैं होते उपाप्कृति को अमादि हत-मनके अस् सीर्ट्र म्स्न सीने परमें नमत्कार किया गया है ) . पानो तोए सन्म लहूणें ' जो अपने अत्रत्न हा नगदे हप आत्मानता-

की नित्त ताधना करे हैं, पान्म महाद्योंने आक्त है, तीन गुनियों से गुन (मुलीक्त) है, की रा के अद्वाहि हमार भेरों का जी जीरादी लाख उत्त एको का मालन कहे हैं, भी सिंह के लगन पराजमी, गजने लमान लाभिजानी, र्याभ (क्रेन) के लगान भड परिणाभी , मिगदे लमान तरल, पशुके तमान निरीह (इन्छ- एहिन) पयनके लमान निः हंग मर्थन विडारी , द्वि के लगान ते जत्वी , तागा के तकन गेर्भार, उमेक के तकन

क्षिट्राउोप एवं अकम्प, न्यन्द्रके तमान शान्ति दामक, मोरीके तमान प्रभाष्ट्राकं, ट्रामीके तलन तहिला, त्रयके जनन आनगत-तिवाती, आकाशके तलन तिलेप, शार्य हालित हे तमान शुद्ध हिरम, समालयभन्छे तमान निरूपले म, समुए-के लागन गुरेगन्द्रम, द्वभीके लगान मधेन्य विरारी हैं, रतनआमार केस्कार्भ ताप क हैं, पटम पद सिर्वाण के उत्सेघक हैं, ऐसे अहानिश आत्र तापता-तम्पन लाभी (हर्दने हितेबी) तापुजनों अत्याद मलमेक रेत यांचाने

पदनें नमट्नार किया गया है। इस मेनदी लक्षते कड़ी किशेबना पर है कि इसमें किसी यहांक विशेबने नमटका की

किसा गात है। महातर कि लिल जैंस दार्म से ती धे करों मे लागने आदि महत्व आप ह जो भर्त दे महान मजार माते जाते हैं, उन रामका ताम रेव मंगलें नहीं दिया जया है हार्गति अग्रित के द्वारे उत्रमा लमावेदा है ही । आम्मदिकाल के अग्रावात ती सेकर हो जिसे हैं 'अति आहे. जात होते , तथ किस किस से प्रियत्वन नाम के किसे जात तायसर हो जिसे हैं 'अति आहे जातन होते , तथ किस किस सीधीमत्वन नाम के किसे जेड़ा जाता। रहातिए विश्वे दिन प्रकार देवत्वान तक के रो देए में जते 'हमान नहीं' किस एका । यहां रसके हताबर रुपरे 'काले कित्यायार्ज' के दिप में अपि जन्हा (तरेहिए कालन) रहा मंत्र के करी किया नात्र रुपरे 'काले कित्यायार्ज' के दिप में अपि जन्हा (तरेहिए कालन) रहा मंत्र के करी किया भार ह रही यहा कर इस मंत्र आत्मर त्वमा त्यभन हासी हैं।